SET-1

Series HRK/2

कोड नं.
Code No. **3/2/1**

रोल नं.
Roll No.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **15** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **16** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा – II

SUMMATIVE ASSESSMENT – II

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)

(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे | *अधिकतम अंक : 90*

Time allowed : 3 hours | *Maximum Marks : 90*

सामान्य निर्देश :

(i) *इस प्रश्न-पत्र के* ***चार*** *खण्ड हैं – क, ख, ग और घ ।*

(ii) *चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना* ***अनिवार्य*** *है ।*

(iii) *यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।*

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

नालंदा विश्वविद्यालय भौगोलिक रूप से दक्षिण बिहार-स्थित राजगीर के समीप है । इसके ध्वंसावशेष आज भी बड़ागाँव तक फैले हुए हैं । ऐसा माना जाता है कि नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना बौद्ध संन्यासियों द्वारा की गई थी, जिनका मूल उद्देश्य एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना करना था जो ध्यान व अध्यात्म के लिए उपयुक्त हो । ऐसा माना जाता है कि महात्मा बुद्ध ने नालंदा की कई बार यात्रा की थी । बहरहाल, इस विश्वविद्यालय का निर्माण कब हुआ था इसे लेकर विद्वानों में एक राय नहीं है । लेकिन ऐतिहासिक दस्तावेज़ों से जानकारी मिलती है कि इस विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्तवंशी शासक कुमारगुप्त ने की थी ।

नालंदा विश्वविद्यालय के अधिकतर छात्र तिब्बतीय बौद्ध-संस्कृतियों — वज्रयान और महायान से सम्बद्ध थे । विश्वविद्यालय-प्रशासन अनुशासन के प्रति जितना कठोर था, शिक्षा को लेकर उतना ही जागरूक, संवेदनशील और सतर्क था । यह इसी से समझा जा सकता है कि प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों को पहले द्वारपाल से वाद-विवाद करना पड़ता था और फिर उसमें उत्तीर्ण होने पर ही उन्हें प्रवेश मिलता था । छात्रों को रहने के लिए छात्रावास की सुविधा उपलब्ध थी । इत्सिंग के लेखन के अनुसार यहाँ होने वाली चर्चाओं में सभी की भागीदारी आवश्यक थी । सभा में मौजूद सभी लोगों के फैसले पर संयुक्त रूप से आम सहमति की आवश्यकता होती थी । विश्वविद्यालय के संचालन के लिए राजाओं द्वारा विशेष अनुदान दिया जाता था लेकिन विश्वविद्यालय के संचालन में उनका किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं था । आश्चर्य यह कि बौद्ध धर्म को न मानने वाले शासक भी इस विश्वविद्यालय को भरपूर अनुदान देते थे । यह शिक्षा के प्रति उनकी अनुरक्ति को ही रेखांकित करता है ।

(i) बौद्ध संन्यासियों ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना क्यों की थी ?

(क) ध्यान और अध्यात्म के लिए उपयुक्त व्यवस्था हो सके

(ख) राष्ट्र की शैक्षिक व्यवस्था में सुधार हो सके

(ग) देश का गौरव बढ़ाया जा सके

(घ) महात्मा बुद्ध के सिद्धांतों का प्रचार हो सके

(ii) नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में क्या ***नहीं*** कहा गया है ?

(क) इसके निर्माण के समय को लेकर विचारक एकमत नहीं है

(ख) वैश्विक धरोहर में शामिल किया जा चुका है

(ग) इसकी स्थापना कुमारगुप्त ने की थी

(घ) इसके अवशेष दक्षिण बिहार में पाए जाते हैं

(iii) इस विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों को क्या करना पड़ता था ?

(क) जागरूक, संवेदनशील और सतर्क होने का प्रमाण देना पड़ता था

(ख) लिखित प्रवेश-परीक्षा उत्तीर्ण करना ज़रूरी था

(ग) द्वारपाल से वाद-विवाद में अपना सिक्का जमाना पड़ता था

(घ) आर्थिक संपन्नता का प्रमाण-पत्र देना पड़ता था

(iv) बौद्ध धर्म न मानने वाले शासकों की उदारता का पता चलता है

(क) शिक्षा के प्रति उनकी अनुरक्ति से

(ख) उनके द्वारा पर्याप्त अनुदान देने से

(ग) उनके द्वारा संचालन करने से

(घ) विश्वविद्यालय के किसी भी फ़ैसले पर उनकी सहमति से

(v) विश्वविद्यालय में भारत के अतिरिक्त किन देशों के विद्यार्थी पढ़ने आते थे ?

(क) पाकिस्तान, चीन, श्रीलंका और कोरिया

(ख) जावा, चीन, नेपाल, ईरान और कोरिया

(ग) जावा, चीन, तिब्बत, श्रीलंका और कोरिया

(घ) नेपाल, जापान, तिब्बत, जावा और कोरिया

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

जोश मलीहाबादी अपने ख़िदमतगार जुगनू को लेकर आश्रम पहुँच गए और बहुत-सी किताबें भी साथ ले गए । जोश कहते हैं, ठाकुर ने मेरी बड़ी आवभगत की । वे लिखते हैं, 'यों तो आश्रम की ज़िंदगी बेहद सादा थी, सुबह-शाम की चहलक़दमी, दोनों वक़्त का स्नान, रोज़ की मौसिकी और घने पेड़ों के साए में पढ़ना-पढ़ाना उस आश्रम की ज़िंदगी का ज़रूरी हिस्सा थे जिसे अलग नहीं किया जा सकता था । एक ख़ासियत और थी कि वहाँ मांस नहीं खाया जा सकता था ।'

रवींद्रनाथ ठाकुर में एक बात और ख़ास थी – वह यह कि उस दौर में कही उनकी बातें आज भी हालात के मुताबिक़ लगती हैं । भारत की जर्जर शिक्षा-व्यवस्था के बारे में उन्होंने कहा था, 'इस देश में हम जिसे स्कूल कहते हैं, वह शिक्षा देने का एक कारख़ाना है । अध्यापक इस कारख़ाने का अंग हैं । साढ़े दस बजे घंटी बजती है और कारख़ाना खुल जाता है । कक्षाएँ चलती रहती हैं और साथ ही अध्यापक का मुँह चलता रहता है । चार बजे कारख़ाना बंद हो जाता है और साथ ही अध्यापक रूपी मशीन भी अपना मुँह बंद कर देती है ।' उन्होंने विद्या के दो विभाग माने थे, एक ज्ञान का, दूसरा व्यवहार का ।

जोश कहते हैं, 'हरचंद मैं अध्यात्म के दायरे से निकल कर चिंतन की ओर धीरे से मुड़ रहा था, लेकिन ठाकुर की कविताएँ इसके बावजूद मुझको बेहद प्रभावित किया करती थीं । मैं उनके अनुवाद पढ़-पढ़ कर सिर धुना करता था, क्योंकि मैं बंगाली ज़बान नहीं जानता था । अगर मैं बंगाली भाषा से वाक़िफ़ होता तो ठाकुर की कविताओं को समझने की तरह समझ सकता लेकिन मुझको इसका बेहद अफ़सोस है कि मैं उनकी कविताओं को अंग्रेज़ी अनुवाद से समझ रहा हूँ, बंगालियों की तरह समझ नहीं सकता ।'

मैं ठाकुर के साथ रहा ही कितना, फिर भी कह सकता हूँ कि धर्म के मामले में वे बड़े ही खुले दिल के थे । निहायत ज़िंदादिल, बेहद शरीफ़, हद से ज़्यादा बेतकल्लुफ़ और ख़ुशमिज़ाज तबियत के इंसान थे ।

(i) आश्रम की ज़िंदगी के बारे में जोश ने कहा

(क) वहाँ की ज़िंदगी सरल और नीरस थी

(ख) अध्ययन-अध्यापन वहाँ का अहम हिस्सा था

(ग) वहाँ की ख़ासियत मांसाहारी भोजन भी था

(घ) वहाँ घने पेड़ों के साए में ही रहना पड़ता था

(ii) रवींद्रनाथ मानते थे कि आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था में अध्यापक और छात्रों के बीच संबंध

(क) नीरस और उबाऊ है

(ख) गुरु और शिष्य के जैसा है

(ग) मशीन और कारख़ाने जैसा है

(घ) घनिष्ठता से परिपूर्ण है

(iii) रवींद्रनाथ के अनुसार शिक्षा के सही मायने हैं

(क) व्यापक ज्ञान प्राप्त करना

(ख) साहित्यिक ज्ञान में दक्षता

(ग) सामान्य ज्ञान का उपार्जन

(घ) ज्ञान और व्यवहार का तालमेल

(iv) जोश को किस बात का दुख था ?

(क) वे रवींद्रनाथ ठाकुर के साथ ज़्यादा समय नहीं रह पाए

(ख) उन्हें किन्हीं कारणों से जल्दी लौटना पड़ा

(ग) उनकी सारी पुस्तकें शांति-निकेतन में ही छूट गईं

(घ) उन्हें बंगाली भाषा नहीं आती थी

(v) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक हो सकता है

(क) जोश की यादें

(ख) जोश मलीहाबादी

(ग) ख़िदमतगार जुगनू

(घ) अध्यात्म से चिंतन तक

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

जीवन की आपाधापी में कब वक़्त मिला
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूँ
जो किया, कहा, माना उसमें क्या बुरा भला ।

जिस दिन मेरी चेतना जगी मैंने देखा
मैं खड़ा हुआ हूँ इस दुनिया के मेले में,
हर एक यहाँ पर एक भुलाने में भूला
हर एक लगा है अपनी-अपनी दे-ले में
कुछ देर रहा हक्का-बक्का, भौंचक्का-सा,
आ गया कहाँ, क्या करूँ यहाँ, जाऊँ किस ज़ा ?
फिर भी एक तरफ़ से आया ही तो धक्का-सा
मैंने भी बहना शुरू किया उस रेले में,
क्या बाहर की ठेला-पेली ही कुछ कम थीं,
जो भीतर भी भावों का ऊहापोह मचा,
जो किया, उसी को करने की मज़बूरी थी,
जो कहा, वही मन के अंदर से उबल चला,
जीवन की आपाधापी में कब वक़्त मिला
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूँ
जो किया, कहा, माना उसमें क्या बुरा भला ।

(i) जीवन की आपाधापी में मानव को किसके लिए समय ***नहीं*** मिला ?

(क) आत्मविश्लेषण करने का

(ख) अपना भला सोचने का

(ग) दूसरों के बारे में सोचने का

(घ) कहीं पर बैठने का

(ii) चेतना जागने पर कवि ने क्या महसूस ***नहीं*** किया ?

(क) वह दुनिया के मेले में अकेला खड़ा है

(ख) यहाँ सभी एक-दूसरे से गिले-शिकवे कर रहे हैं

(ग) सब लेन-देन में व्यस्त हैं

(घ) हर व्यक्ति अपने अस्तित्व को भी भूल गया है

(iii) कवि हक्का-बक्का क्यों है ?

(क) मेले के ठाठ-बाट उसे आकर्षित कर रहे थे

(ख) उसका मित्र नहीं मिल रहा था

(ग) उसे अपना गंतव्य नहीं मिल रहा था

(घ) मेले में अपने लोग मिल गए थे

(iv) 'क्या बाहर की ठेला-पेली ही कुछ कम थीं,
जो भीतर भी भावों का ऊहापोह मचा' – का भाव है

(क) ठेलों पर सामान बिक रहा था और जेब में पैसा नहीं था

(ख) भावनाओं की ऊहापोह से हैरान-परेशान था

(ग) रेलम-पेल में अपने को छोड़ दिया

(घ) भागमभाग के बीच भी मन के भाव कविता लिखने को उकसाते थे

(v) 'मन के अंदर से उबल चला' से क्या अभिप्राय है ?

(क) मन की भावनाओं पर उसका अंकुश नहीं है

(ख) वह भीड़-भाड़ से क्रोधित हो गया

(ग) वह दुनिया के ताम-झाम में फँस गया

(घ) उसका मन इधर-उधर भटक रहा था

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

मकान चाहे कच्चे थे,
लेकिन रिश्ते सारे सच्चे थे
चारपाई पर बैठते थे
पास-पास रहते थे ...
सोफ़े और डबल बैड आ गए
दूरियाँ हमारी बढ़ा गए ...
छतों पर अब न सोते हैं
बात-बतंगड़ अब न होते हैं ...
आँगन में वृक्ष थे
साझे सुख-दुख थे ...
दरवाज़ा खुला रहता था
राही भी आ बैठता था ...
कौवे भी काँवते थे
मेहमान आते-जाते थे ...
एक साइकिल ही पास था
फिर भी मेल-जोल था ...
रिश्ते निभाते थे
रूठते मनाते थे ...
पैसा चाहे कम था
माथे पर न ग़म था ...
मकान चाहे कच्चे थे
रिश्ते सारे सच्चे थे ...
अब शायद कुछ पा लिया है,
पर लगता है कि बहुत कुछ गँवा दिया है ...

(i) रिश्तों में दरारें कब पड़ गई ?

(क) जब पक्के मकानों में दिखावे ने अपनी जगह बनाई

(ख) जब छतों पर लोगों ने सोना शुरू कर दिया

(ग) जब कच्चे मकानों में पड़ोसी ज़बरन आ गए

(घ) लोगों ने अपने-अपने घर दूर-दूर बना लिए

(ii) आँगन में वृक्ष थे
साझे सुख-दुख थे ... – का भावार्थ है

(क) वृक्ष के नीचे ही दुख झेलते थे

(ख) वृक्ष के नीचे ही सुख पाते थे

(ग) आँगन का वृक्ष सुख-दुख का साझीदार था

(घ) आँगन के वृक्ष पर सबका अधिकार था

(iii) कवि कच्चे घरों वाले समय को आज भी बेहतर क्यों मानता है ?

(क) रिश्तों में अपनत्व और गर्माहट के कारण

(ख) एक साइकिल होने से प्रदूषण में कमी के कारण

(ग) दरवाज़ा खुला रहने पर भी चोरी न होने के कारण

(घ) छतों पर बात-बतंगड़ होने के कारण

(iv) 'रिश्ते निभाते/रूठते मनाते थे' ... कथन से कवि किस तथ्य को उजागर करना चाहता है ?

(क) स्वार्थ

(ख) अहंकार

(ग) परस्पर सौहार्द

(घ) हर्षोल्लास

(v) कवि भावुक क्यों हो उठा है ?

(क) उसने अपना परिवार खो दिया है

(ख) अब सद्‌भावना नहीं दिखती है

(ग) अब धैर्य और आशा नहीं है

(घ) पैसे का अभाव हो गया है

खण्ड ख

5. निर्देशानुसार कीजिए : *1×3=3*

(क) हवा में थोड़ी गर्मी आई तब ठठेरा कॉपरस्मिथ की ताल-कचेरी शुरू हो जाती है । (वाक्य का भेद लिखिए)

(ख) मझोले आकार का यह पक्षी बहुत सजीला होता है । (मिश्र वाक्य बनाइए)

(ग) हम पक्षी को उसकी मीठी आवाज़ से पहचानते हैं । (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

6. निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तित कीजिए : *1×4=4*

(क) तोते उन्मुक्त किलकारियाँ भरते हुए शोर मचाते हैं । (कर्मवाच्य में)

(ख) तोतों और मैनाओं द्वारा भी सभा की जाती है । (कर्तृवाच्य में)

(ग) बच्चे तेज़ दौड़ते हैं । (भाववाच्य में)

(घ) बीमारी के कारण उससे उठा नहीं जाता । (कर्तृवाच्य में)

7. निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए : *1×4=4*

संसार में <u>दुश्मन</u> कोई <u>नहीं</u> । <u>चंचल</u> मन ही <u>आपका</u> अपना दुश्मन है ।

8. (क) निम्नलिखित काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए : *1×2=2*

(i) अथवा अधिक कहना वृथा है, पार्थ का प्रण है यही
साक्षी रहे सुन ये वचन रवि, शशि, अनल, अंबर, मही ।
सूर्यास्त से पहले न जो मैं कल जयद्रथ – वध करूँ,
तो शपथ करता हूँ स्वयं मैं ही अनल में जल मरूँ ।

(ii) भूख से सूख ओंठ जब जाते
दाता-भाग्यविधाता से क्या पाते ?
चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए ।

(ख) (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है ? *1*

हरि किलकत जसुमति की कनियाँ ।

मुख में तीनि लोक दिखाए, चकित भई नंद-रनियाँ ।

(ii) करुण रस का स्थायी भाव लिखिए । *1*

खण्ड ग

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : *2+2+1=5*

अत्रि की पत्नी पत्नी-धर्म पर व्याख्यान देते समय घंटों पांडित्य प्रकट करे, गार्गी बड़े-बड़े ब्रह्मवादियों को हरा दे, मंडन मिश्र की सहधर्मचारिणी शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दे ! ग़ज़ब ! इससे अधिक भयंकर बात और क्या हो सकेगी ! यह सब पापी पढ़ने का अपराध है । न वे पढ़तीं, न वे पूजनीय पुरुषों का मुक़ाबला करतीं । यह सारा दुराचार स्त्रियों को पढ़ाने ही का कुफल है । समझे ? स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूँट ! ऐसी ही दलीलों और दृष्टांतों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखकर भारतवर्ष का गौरव बढ़ाना चाहते हैं ।

(क) लेखक ने शिक्षित स्त्रियों की योग्यता के क्या प्रमाण दिए हैं ?

(ख) स्त्रियों को अपढ़ रखकर क्या भारत का गौरव बढ़ाना संभव है ? अपने विचार प्रकट कीजिए ।

(ग) लोगों ने स्त्रियों के पढ़ाने का कुफल क्या बताया है ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : *2×5=10*

(क) मन्नू भंडारी के पिताजी की स्वाभाविक प्रवृत्ति कैसे थी ?

(ख) स्त्री-शिक्षा के पक्ष में एक तर्क पाठ के आधार पर दीजिए ।

(ग) बिस्मिल्ला खाँ अपनी शहनाई-वादन की कला को ख़ुदा की मेहरबानी मानते हैं । कारण स्पष्ट कीजिए ।

(घ) पेट भरा और तन ढँका होने पर भी मनुष्य को नींद न आने का क्या कारण रहा होगा ?

(ङ) रूस का भाग्यविधाता किसे कहा गया है और क्यों ?

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : *2+2+1=5*

यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए ।

(क) संगतकार मुख्य-गायक को क्या अहसास कराना चाहता है ?

(ख) संगतकार की आवाज़ में कौन-सी हिचक दिखाई देती है ? क्यों ?

(ग) कैसी कोशिश को मानवता माना है ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : *2×5=10*

(क) 'कन्यादान' कविता में 'पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' — कहकर माँ क्या समझाना चाहती है ?

(ख) वस्त्र और आभूषणों को शाब्दिक-भ्रम किसलिए कहा गया है ?

(ग) 'छाया मत छूना' कविता में क्या संदेश निहित है ?

(घ) 'केवल मुनि जड़ जानहि मोहीं' – परशुराम के इस कथन में समाज की किस भावना की ओर संकेत है ?

(ङ) धनुष को तोड़ने वाला कोई आपका दास होगा – ऐसा कब और क्यों कहा गया ?

13. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है ? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए ? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आलोक में जीवन-मूल्यों के आधार पर उत्तर दीजिए । *5*

खण्ड घ

14. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए : *10*

(क) <u>शिक्षा का गिरता स्तर</u>

- शिक्षा का उद्देश्य
- वर्तमान शिक्षा-प्रणाली
- पुस्तकीय ज्ञान

(ख) <u>मन के हारे हार है मन के जीते जीत</u>

- निराशा मानव के लिए अभिशाप
- उत्साह के अनुकूल परिणाम
- आशावादी होने के लाभ

(ग) <u>बाल-मज़दूरी</u>

- बाल-मज़दूरी की विवशता
- समाज की भूमिका
- सरकार द्वारा उठाए गए क़दम

15. साक्षी मलिक को पत्र लिखकर रियो ओलंपिक में कुश्ती में उसके शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दीजिए । *5*

अथवा

पुलिस वाले के सद्व्यवहार के लिए अपने क्षेत्र के थानाध्यक्ष को पत्र लिखकर उसकी प्रशंसा कीजिए ।

16. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए : *5*

मनुष्य अपने भविष्य के बारे में चिंतित है । सभ्यता की अग्रगति के साथ ही चिंताजनक अवस्था उत्पन्न होती जा रही है । इस व्यावसायिक युग में उत्पादन की होड़ लगी हुई है । कुछ देश विकसित कहे जाते हैं, कुछ विकासोन्मुख । विकसित देश वे हैं जहाँ आधुनिक तकनीक का पूर्ण उपयोग हो रहा है । ऐसे देश नाना प्रकार की सामग्री का उत्पादन करते हैं और उस सामग्री की खपत के लिए बाज़ार ढूँढ़ते रहते हैं । अत्यधिक उत्पादन-क्षमता के कारण ही ये देश विकसित और अमीर हैं । विकासोन्मुख या ग़रीब देश उनके समान ही उत्पादन करने की आकांक्षा रखते हैं और इसलिए उन सभी आधुनिक तरीक़ों की जानकारी प्राप्त करते हैं । उत्पादन-क्षमता बढ़ाने का स्वप्न देखते हैं । इसका परिणाम यह हुआ है कि सारे संसार में उन वायुमंडल-प्रदूषण यंत्रों की भीड़ बढ़ने लगी है जो विकास के लिए परम आवश्यक माने जाते हैं । इन विकास-वाहक उपकरणों ने अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं । वायुमंडल विषाक्त गैसों में ऐसा भरता जा रहा है कि संसार का सारा पर्यावरण दूषित हो उठा है, जिससे वनस्पतियों तक के अस्तित्व संकटापन्न हो गए हैं । अपने बढ़ते उत्पादन को खपाने के लिए हर शक्तिशाली देश अपना प्रभाव-क्षेत्र बढ़ा रहा है और आपसी प्रतिद्वंद्विता इतनी बढ़ गई है कि सभी ने मारक-घातक अस्त्रों का विशाल भंडार बना रखा है ।